कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



भारतीय व्यापार

- प्राचीन काल से ही भारत में पैदा होने वाली महीन कपास का यूरोपीय देशों को निर्यात किया जाता था।
- इसी कारण वहाँ के उद्योगपतियों ने सरकार पर दबाव डाला कि वह कपास के आयात पर रोक लगाकर स्थानीय उद्योगों की रक्षा करे।
- फलस्वरूप ब्रिटेन में आयतित कपड़ों पर सीमा शुल्क थोप दिये गये। वहां महीन भारतीय कपास का आयात कम होने लगा।
- सीमा शुल्क के कारण ब्रिटिश बाजार से बेदखल हो जाने के कारण भारतीय कपड़ों को दूसरे देशों में भी भारी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा।
- इससे भारतीय सूती कपड़ों का निर्यात लगातार गिरता चला गया।
- सन् 1800 के आसपास जहाँ कुल निर्यात में सूती कपड़े का निर्यात 30 प्रतिशत था जो 1815 में घटकर 15 प्रतिशत ही रह गया था तथा यह अनुपात 1870 तक तो केवल 3 प्रतिशत ही रह गया था।



(ईस्ट इंडिया कंपनी हाउस, लंदन)
ईस्ट इंडिया कंपनी के दुनिया भर में चलने वाले कार्यों का केन्द्र यहीं था।

फिर भारत ने किन चीजों का निर्यात किया?

- जिस तेजी से भारत में निर्मित चीजों का निर्यात घटता जा रहा था उतनी ही तेजी से कच्चे मालों का निर्यात बढ़ता जा रहा था।
- 1812–1871 के बीच कच्चे कपास का निर्यात 5 प्रतिशत से बढ़कर 35 प्रतिशत तक पहुंच गया था।
- कपड़ों की रंगाई के लिए इस्तेमाल होने वाले नील का भी कई दशक तक बड़े पैमाने पर निर्यात होता रहा।
- 1820 के दशक से चीन को बड़ी मात्रा में अफीम का निर्यात किया जाने लगा।
- कुछ समय तक तो भारतीय निर्यात में अफीम का हिस्सा ही सर्वाधिक था।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- ब्रिटेन की सरकार भारत में अफीम की खेती करवाती थी और उसे चीन को निर्यात करके उससे जो पैसा मिलता था उसके बदले में चीन से चाय तथा दूसरे पदार्थों का आयात किया जाता था।

ब्रिटेन का व्यापार अधिशेष :-

- 19वीं सदी में भारतीय बाजारों में ब्रिटिश औद्योगिक उत्पादों की बाढ़ सी आ गई थी।
- भारत से भी ब्रिटेन को भेजे जाने वाले खाद्यान्न तथा कच्चे मालों के निर्यात में वृद्धि हुई थी।
- ब्रिटेन से जो माल भारत आता था उसकी कीमत भारत से ब्रिटेन जाने वाले माल की कीमत से बहुत ज्यादा होती थी।
- अत: भारत के साथ ब्रिटेन हमेशा व्यापार अधिशेष की अवस्था में रहता था।
- यानि इस आपसी व्यापार में हमेशा ब्रिटेन को ही फायदा रहता था।
- इस मुनाफे के सहारे ब्रिटेन दूसरे देशों के साथ होने वाले व्यापारिक घाटे की भरपाई कर लेता था।
- बहुपक्षीय बंदोबस्त ऐसे ही काम करता है जिसमें यदि एक देश को दूसरे देश के साथ व्यापार में घाटा हो रहा हो तो वह उसकी भरपाई तीसरे देश से मुनाफा कमा कर करता है।
- ब्रिटेन को व्यापार से जो अधिशेष हासिल होता था उससे 'होम चार्जेज' (देशी खर्चे) पूरे होते थे।
- इसके तहत (1) ब्रितानी अफसरों और व्यापारियों द्वारा अपने घर भेजी गई निजी रकम (2) पूर्व ब्रितानी अफसरों की पेंशन तथा (3) भारतीय बाहरी कर्जे पर ब्याज को चुकाया जाता था।

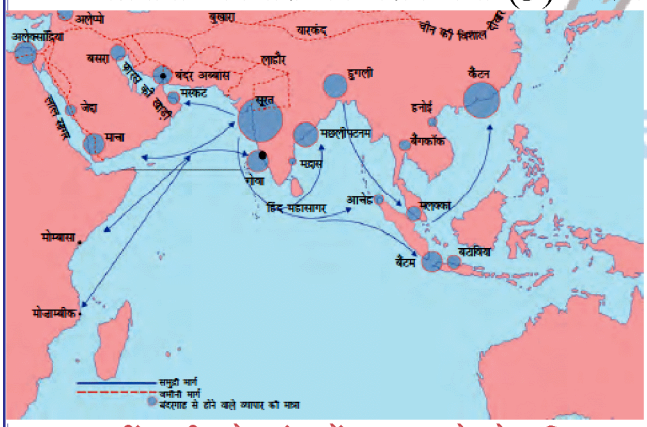

सत्रहवीं सदी के अंत में भारत को शेष विश्व से जोड़ने वाले व्यापारिक मार्ग

महायुद्धों के बीच अर्थव्यवस्था

- पहला महायुद्ध मुख्य रूप से यूरोप में ही लड़ा गया लेकिन उसका असर सारी दुनिया में महसूस किया गया।
- इस युद्ध ने विश्व अर्थव्यवस्था को एक ऐसे संकट में ढकेल दिया जिससे उबरने में दुनिया को तीन दशक से भी ज्यादा का समय लग गया।
- इस दौरान पूरी दुनिया में आर्थिक और राजनीतिक अस्थिरता बनी रही और अंत में मानवता एक और विनाशकारी महायुद्ध के नीचे कराहने लगी।

युद्धकालीन रूपांतरण

- प्रथम विश्व युद्ध दो खेमों के बीच लड़ा गया था।
- एक पाले में (1) मित्र राष्ट्र - ब्रिटेन, फ्रांस और रूस थे।
- दूसरे पाले में (2) केन्द्रीय शक्तियां :-
  - (i) जर्मनी
  - (ii) आस्ट्रिया-हंगरी
  - (iii) ऑटोमन-तुर्की थे।
- अगस्त 1914 में जब युद्ध शुरू हुआ तो उस समय कई देशों को ऐसा लगता था कि यह युद्ध ज्यादा

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

से ज्यादा क्रिसमस तक खत्म हो जायेगा। यह युद्ध तो 4 साल से भी ज्यादा समय तक चलता रहा।

- मानव सभ्यता के इतिहास में ऐसा भीषण युद्ध पहले कभी नहीं हुआ था।
- इस युद्ध में दुनिया के सबसे अग्रणी औद्योगिक राष्ट्र एक दूसरे से जूझ रहे थे।
- शत्रुओं को नेस्तनाबूद करने के लिए उनके पास बेहिसाब औद्योगिक शक्ति इक्ट्ठा हो चुकी थी।
- इस युद्ध में मशीनगनों, टैंकों, हवाई जहाजों और रासायनिक हथियारों का भयानक पैमाने पर इस्तेमाल किया गया था।
- ये सभी चीजें आधुनिक विशाल उद्योगों की देन थी।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान एक हथियार फैक्ट्री में काम करते मजदूर।

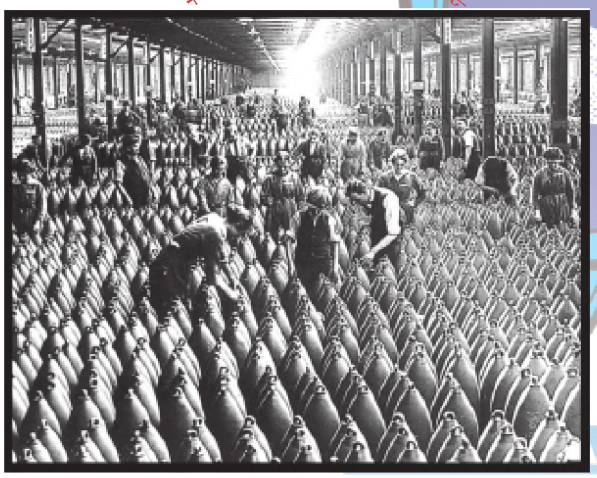

युद्ध की जरूरतों को पूरा करने के लिए हथियारों के उत्पादन में तेजी से इजाफा हुआ।

- इस युद्ध के लिए दुनियाभर से असंख्य सिपाहियों की भर्ती करके विशाल जलपोतों व रेलगाड़ियों में भरकर युद्ध के मोर्चों पर ले जाया गया।
- इस औद्योगिक युग से पहले ऐसे युद्ध की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।
- युद्ध में 90 लाख से ज्यादा लोग मारे गये और 2 करोड़ लोग घायल हुए।

युद्ध के परिणाम :-

- मृतकों और घायलों में ज्यादातर कामकाजी उम्र के लोग थे। इस युद्ध के बाद यूरोप में कामकाज के लायक लोगों की संख्या बहुत कम रह गई थी।
- परिवार के सदस्य घट जाने से युद्ध के बाद परिवारों की आय भी गिर गई।
- युद्ध संबंधी सामग्री का उत्पादन करने के लिए उद्योग लगाये गये थे।
- समाजों में बदलाव आया। पुरूष जब युद्ध के मोर्चे पर जाने लगे तो उनके कामों को संभालने के लिए स्त्रियों को बाहर आकर वे काम करने पड़े जिन्हें अभी तक पुरूषों का ही काम माना जाता था।
- इस युद्ध के कारण दुनिया की कुछ शक्तिशाली आर्थिक ताकतों के बीच संबंध टूट गये।
- वे तो अब तक दूसरे से बदला लेने पर उतारू थे।
- इस युद्ध में ब्रिटेन को अमेरिकी बैंकों से भारी कर्ज लेना पड़ा।
- अब अमेरिका कर्जदार की बजाय कर्जदाता देश बन गया।
- आशय यह है कि अमेरिका व उसके नागरिकों की संपत्तियों की दूसरे देशों में कीमत, अमेरिका में दूसरे देशों की संपत्तियों की कीमत से ज्यादा हो चुकी थी।

युद्धोत्तर – सुधार

- युद्ध के बाद आर्थिक स्थिति को पटरी पर लाने का रास्ता काफी मुश्किल साबित हुआ।
- जहां युद्ध से पहले ब्रिटेन दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था था। युद्ध के बाद सबसे लंबा संकट उसे ही झेलना पड़ा।
- जिस समय ब्रिटेन युद्ध से जूझ रहा था उसी समय भारत और जापान में उद्योग विकसित होने लगे थे।

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- अब भारतीय बाजारों में ब्रिटेन को वर्चस्व वाली स्थिति प्राप्त करना बहुत मुश्किल हो गया था।
- अब तो उसे जापान से भी मुकाबला करना था सो अलग।
- युद्ध के खर्चे की भरपाई के लिए ब्रिटेन ने अमेरिका से जम कर कर्जे लिऐ थे। इसका परिणाम यह हुआ कि युद्ध खत्म होने तक ब्रिटेन भारी विदेशी कर्जों में दब गया था।
- युद्ध के कारण मांग, उत्पादन और रोजगारों में वृद्धि होने से आर्थिक उत्साह का माहौल पैदा हो गया था।
- लेकिन जब युद्ध के बाद आर्थिक उत्साह शांत होने लगा तो उत्पादन गिरने लगा और बेरोजगारी बढ़ने लगी।
- 1921 में हर 5 में से 1 ब्रिटिश मजदूर के पास काम नहीं था।
- युद्धोत्तर वातावरण में रोजगार की कमी और अनिश्चितता छा गई थी।
- बहुत सारी कृषि आधारित अर्थव्यवस्थाऐं भी संकट में थी।

उदाहरण :- युद्ध से पहले पूर्वी यूरोप गेहूँ की आपूर्ति का एक बड़ा केन्द्र था। जब युद्ध के दौरान आपूर्ति में गड़बड़ होने लगी तो कनाडा, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया ने गेहूँ की पैदावार बढ़ा ली। लेकिन युद्ध के बाद पूर्वी यूरोप में गेहूँ की पैदावार सुधरने लगी तो विश्व बाजारों में गेहूँ की अधिकता हो गई।

अनाज की कीमतें गिर गई। ग्रामीण आय कम हो गई और किसान गहरे कर्ज संकट में फंस गये।

LET'S LEARN TOGETHER

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here